इस प्रकार, कान का साँचा एक श्रवणयंत्र के लिए महत्वपूर्ण एवं सहायक है । यह जरूरी है कि कान का साँचा हर उपयोगकर्ता के लिए बनाया जाए जिससे अधिकतम लाभ मिल सके।

क्या आपने कान को एक कान, नाक एवं गला चिकित्सक द्वारा नियमित रूप से जाँच करवाया और अपने श्रवणयंत्र की एक श्रवण विशेषज्ञ द्वारा नियमित रूप से जाँच करवाई है ।

यदि आपको कोई प्रश्न हैं, तो कृपया हमें तुरंत संपर्क करें ।

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान

श्रवण विज्ञान विभाग

मानसगंगोत्री, मैसूर 570 006

दूरभाष: (0821) 2512000 / 2502100
टोल फ्री: 18004255218
फैक्स : 0821 – 2510515
ईमेल:director@aiishmysore.in
वेब्साइट: www.aiishmysore.in

कार्य समय: प्रात: 9.00 बजे से सायं 5.30 बजे तक
सोमवार से शुक्रवार, केंद्रीय सरकारी छुट्टी दिनों को छोड़कर

अनुवादित द्वारा: श्रीमती चांद्नी जैन
डा. प्रवीन कुमार
श्रीमती राजलक्ष्मी आर

कान के साँचे का उपयोग एवं उसकी देख रेख

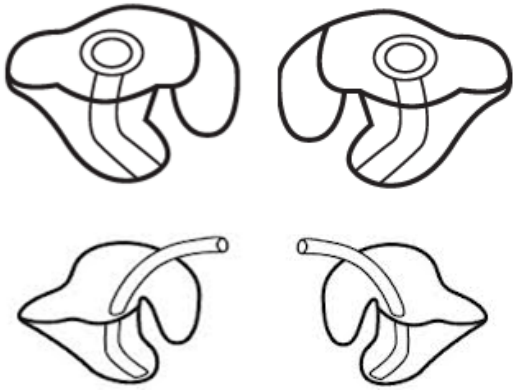

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान

श्रवण विज्ञान विभाग

मानसगंगोत्री

कान के साँचे का उपयोग एवं उसकी देख रेख

[Care, maintenance and use of earmolds]

कान का साँचा एक प्लास्टिक या सिलिकॉन की प्रविष्टि है जिसकी सहायता से श्रवणयंत्र की प्रवर्धित ध्वनि कान के अंदर कान की नली मे जाती है ।

कान के साँचा की देखभाल:

निम्नलिखित चीजों से कान के साँचे की रक्षा की जानी चाहिए:

- टूट्ना, गर्मी, कीट, हानि और रसायन ।
- साँचे को रिसीवर से अलग करके साबुन और गुनगुने पानी के साथ समय–समय पर साफ करें ।
- जो कान का साँचा कान के पीछे पहनने वाले श्रवणयंत्र के साथ उपयोग किया जाता है उसे सफाई के लिए व्यूबिंग से अलग किया जाना चाहिए ।
- कान के साँचे के पूरी तरह से सूखे जाने ही पर रिसीवर के साथ पुन: जोड़े ।
- कान के साँचे को रिसीवर से बार बार अलग नही किया जाना चाहिए क्योकि इससे स्प्रिंग की लचक जा सकती है, लेकिन साँचा धोने से पहले रिसीवर जरूर हटा दे।
- कान के साँचे की नली को गंदगी से मुक्त रखा जाना चाहिए । इस तरह की रूकावट श्रवणयंत्र से एक अप्रिय ध्वनि उत्पन्न कर सकती है और ध्वनि के साथ हस्तक्षेप भी कर सकती है ।
- जब पुराना साँचा ढीला हो जाए तो नए कान के साँचे को बनाया जाना चाहिए, जैसे की बच्चो में होता है ।
- कान के साँचे को बुजुर्ग उम्र बढ़ने से व्यक्तियों के लिए भी दोबारा बनवाने की आवश्यकता होती है क्योकि उम्र बढ़ने के कारण कान में संकोचन और झुर्रिया हो सकती है ।
- जब साँचा दोबारा बनवाना हो तो उपयोगकर्ता स्वयं आ कर अपने कान के छापे दें ।
- श्रवणयंत्र के रिसीवर को साँचे के साथ जोड़ते और निकालते हुए श्रवणयंत्र को बंद कर दे और ध्वनि नियंत्रण यंत्र का न्यूनतम मे रखें ।
- साँचे को रिसीवर के साथ जोड़ते समय बल का प्रयोग न करें, इससे रिसीवर को नुकसान हो सकता है ।

एहतियात :

1. कान का साँचा पहनने से पहले कान मे पानी, गंदगी और एलर्जी, हो तो कान, नाक, गला विशेषज्ञ से इलाज करवाया जाना चाहिए ।
2. श्रवणयंत्र के साथ साथ प्लास्टिक की टिप दी जाती है । इन्हे अस्थायी रूप से इस्तेमाल किया जा सकता है जब तक कान का साँचा तैयार नहीं होता है ।
3. कान की टिप दो भागों से मिलकर बनती है । कान की टिप के दोनों भागों को श्रवणयंत्र रिसीवर से हटाने के बाद ही कान का साँचा लगाया जाना चाहिए ।
4. ध्यान रखे की बच्चे खलते समय कान के साँचे में कीचड़ या छड़ी नहीं डाले ।
5. साँचा दो कानों के लिए अलग अलग होता है और उसको उल्टा नही लगा सकते ।
6. यदि बच्चे या श्रवणयंत्र उपयोगकर्ता को साँचा पहनने के बाद चमड़ी मे कोई नुकसान होता है तो कान नाक गले श्रवण विशेषज्ञ से संपर्क करे ।

एक अच्छे फिटिंग साँचे को ।

1) सुरक्षित रूप से फिट करने के लिए कपास या कागज के एक टुकड़े की जरूरत नहीं होती है ।
2) ध्वनि उत्पन्न नहीं करता है ।
3) उपयोगकर्ता के लिए आरामदायक होता है ।
4) सामान्य चेहरे आंदोलनों के साथ हस्ताक्षेप नहीं करता है ।

कान का साँचा अगर ठिक से फिट नही हुआ है तो ।

1) अप्रिय ध्वनि ।
2) रिसीवर का गिरना ।
3) कान में ध्वनि की अनुचित प्रवाह ।
4) साँचा ठीक से न फिट होने के कारण खरोंच आ सकती है जिससे कान मे फोड़ा हो सकता है ।
5) असुविधा ।